विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक-11/07/2020***
वर्ग-चतुर्थ ***विषय-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
(N.C.E.R.T. पर आधारित)
पाठ-7 (पुष्प की अभिलाषा)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने क्रिया के बारे में जाना। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्ययन-सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ते होंगे। आज कि कक्षा में आपको 'पुष्प की अभिलाषा' कविता पढ़ना है। जो कि इस प्रकार है। :—

पाठ परिचय— *'एक भारतीय आत्मा' के विरुद्ध से विभूषित श्री माखन लाल चतुर्वेदी की यह कविता छोटी होने के बावजूद देश भक्ति की गंभीर भावना से ओतप्रोत तथा प्रसिद्ध हैं। इसकी लोकप्रियता इतनी है कि देश भक्ति की चर्चा जहाँ कहीं भी होती है , शहादत को आदर देने के लिए इनकी अंतिम पंक्तियों को उद्धृत कियाजाता है। यह कविता अवश्य स्मरणीय है।*

चाह नहीं मैं सूरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में,
बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ परबड़ें तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

— श्री माखन लाल चतुर्वेदी।

गृहकार्य:—

बच्चों, कविता को अपने वर्ग-कार्य कॉपी में शुद्ध-शुद्ध तथा सुंदर अक्षरों में लिखें एवं याद करें।